

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# कक्षा - 9

## हिंदी (आलोक)

### अध्याय – 16

## टूटा पहिया

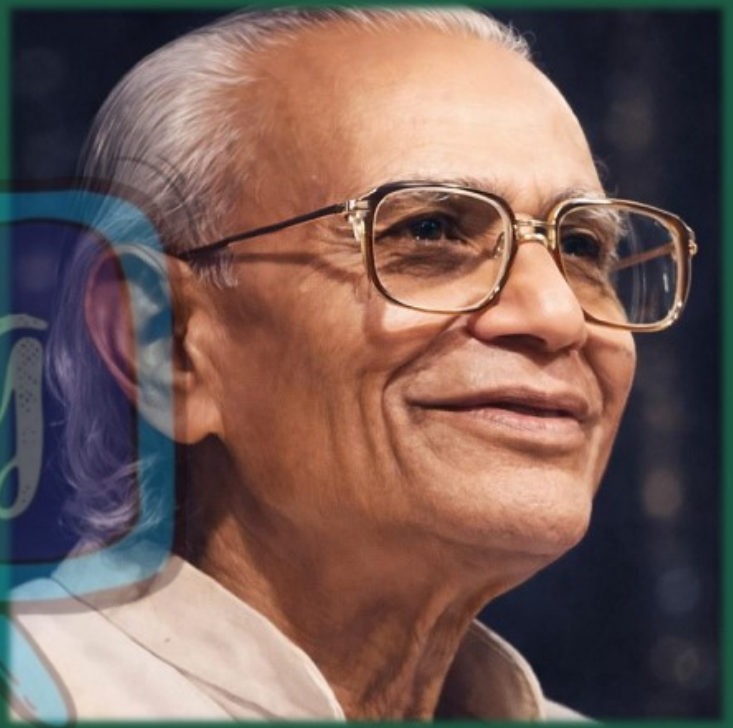
धर्मवीर भारती

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



धर्मवीर भारती

## कवि परिचय

धर्मवीर भारती हिंदी साहित्य के एक बहुआयामी और दिग्गज साहित्यकार थे। जिन्होंने कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी और संपादन, हर क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

जन्म एवं शिक्षा : 1926 ई., इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) प्रारंभिक शिक्षा सरकारी विद्यालयों में ।

उच्च शिक्षा : इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की ।

कार्य-जीवन: इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यापक । साप्ताहिक संगम में उप-संपादक । 1959 ई. में मुंबई जाकर धर्मयुग के संपादक बने ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

साहित्यिक पहचान: 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि । प्रगतिवादी कवि, मूलतः वे गीतकार थे रोमानी कवि के रूप में प्रेम और सौंदर्य के कवि थे ।

पौराणिक कथाएँ : अंधायुग और कनुप्रिया ।

प्रमुख काव्य-कृतियाँ : अंधायुग, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष ।

गद्य-कृतियाँ : गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ठेले पर हिमालय , कहनी – अनकहनी, बंद गली का आखिरी मकान ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अन्य योगदान : विश्व साहित्य की श्रेष्ठ कविताओं का हिन्दी अनुवाद ।

निधन : 1997 ई.

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संकलित कविता टूटा पहिया भारती जी के सात गीत वर्ष नामक काव्य-संकलन से ली गयी है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है। इसका संदेश यह है कि जीवन में तुच्छ से तुच्छ और लघु से लघु समझी जाने वाली वस्तु अथवा व्यक्ति भी कभी असत्य और अन्याय से लड़ने में अत्यधिक उपयोगी और शक्तिशाली सिद्ध हो सकता है। महाभारत के चक्रव्यूह प्रसंग को आधार बनाकर कवि ने यहाँ इसी तथ्य को निरुपित किया है। चक्रव्यूह में घिरे, अकेले और निहत्थे अभिमन्यु ने अपने

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

रथ के टूटे पहिए से असत्य पक्ष के भयंकर अस्त्रों से लोहा लिया था।



मैं

रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ

लेकिन मुझे फेंको मत !



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation



क्या जाने कब-

इस दुरूह चक्रव्यूह में

अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ

कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर

जाय।

दुरूह – কঠিন, টান

चक्रव्यूह – (মহাভাৰতৰ যুদ্ধত ব্যৱহৃত এক প্ৰকাৰৰ যুদ্ধ কৌশল য'ত সৈন্যসকলক বিভিন্ন ঘেৰত স্থাপিত কৰা হৈছিল।

अक्षौहिणी – প্ৰাচীন ভাৰতৰ সৈন্য বাহিনীৰ একোটা ভাগ (য'ত 1,09,350 জন পদাতিক সৈন্য, 65,610 টা ঘোঁৰা, 21,870 খন ৰথ, 21,870 টা হাতী থাকে)।

दुस्साहसी– অত্যন্ত কঠিন কাম কৰোঁতা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली-निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें,

महारथी – योद्धा
निहत्थी – अस्त्रविहीन
ब्रह्मास्त्रों – মহাবিনাশকাৰী অস্ত্র, ব্রহ্মাস্ত্র

तब मैं

रथ का टूटा हुआ पहिया

उसके हाथों में

ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ,

मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ!

| | |
|---|---|
| लोहा लेना | – युद्ध करना |

लेकिन मुझे फेंको मत

इतिहासों की सामूहिक गति

सहसा झूठी पड़ जाने पर

क्या जाने-

सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले !!

सामूहिक – একেলগে, সমুহীয়াভাৱে
सहसा – হঠাৎ
आश्रय – অৱলম্বন, সহায়

# मूल्यांकन



1 | कविता में “टूटा हुआ पहिया” किसका प्रतीक है?

A धनवान व्यक्ति का

B शक्तिशाली अस्त्र का

✓ C कमजोर और उपेक्षित व्यक्ति का

# मूल्यांकन





**2** कविता में “चक्रव्यूह” का क्या अर्थ है ?

A युद्ध का मैदान

B साधारण रास्ता

C जटिल और कठिन परिस्थिति

# मूल्यांकन





**3** कविता का आधार किस ग्रंथ की घटना है ?

A रामायण

B वेद

C महाभारत